

Class - B.A. Part - I

Sub - Hindi (Hon) Paper - I

Written by Raashan Khatun
R.B.G.R College

(1) भक्ति काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का
मूल्यांकन करें ?

उत्तर - पूर्व मध्यकालीन भक्ति काव्य का
आरंभ होने से पहले ही प्रांतीय
भाषा अपने-अपने अपभ्रंशों का अनु-
सरण करते हुए साहित्य रचना में
प्रवृत्त थीं। इनमें वर्ण्य विषयों
काव्य रूपों और रचनाओं में
विविध परंपराएँ प्रचलित थीं जो
अनगू, अटपटी व कटपटांग लगती
थी। इनमें वर्ण्य विषय या तो
प्रचलित धर्मों से संबद्ध थे
या लोकोन्मुखी साहित्य-राजन की
प्रवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक मुखर थी।
परंतु भक्ति काव्य की रचना होती-
होती इनमें नवीन प्रवृत्तियाँ प्रवेश
पाने लगीं और सुचारु के साथ-
साथ परिष्कार के लक्षण भी
प्रकट होने लगे। तदनुसार सिद्धों,
मुनियों, नाथों व सुफियों की धर्म-
मार्ग परंपराओं का विकास होने
लगा व साहित्य निर्माण की नवीन
प्रवृत्तियों व नवीन प्रवृत्तियों के रूप
उभरने लगे। इस प्रकार की प्रवृत्तियों
को अंग्रेज करने में, मध्यदेशीय
भाषा होने के कारण हिन्दी स्वभावतः
आगे रही। पालि, प्राकृत और अप-
भ्रंश की रचनाएँ हीनातर पहली
माघी और संस्कृत का प्रयोग वद-

विशेषी वर्गों द्वारा भी मान्य समझे जाने लगा। उपर्युक्त साहित्यिक प्रवृत्तियों की प्रवृत्ति में पूर्व मध्यकाल में भक्ति काव्य की रचना आरंभ हुई और इसे लोक जागृति का योगदान सुलभ रहा। अनुभववादी निगुण काव्य की मूल प्रेरणा प्राचीनकाल से ही विद्यमान रही जो निराला सत्त्व की ओर से बल और बहाव मिला। उसका मूल उद्देश्य व्यक्तिगत उत्कर्ष के निमित्त आध्यात्मिक दृष्टि का सहारा लेना था। इसकी सफलता के लिए सदाचार और भैतिक भावना पर विशेष बल दिया जाने लगा और आगे चल कर यह भक्तिकाव्य की एक प्रमुख विशेषता बन गयी। विदेशी तथा विजातीय मुस्लिम आक्रमणकारियों के पालन-स्वरूप प्रबुद्ध लोगों का ध्यान आत्मनिरीक्षण और परिस्थिति परीक्षण की ओर आकर्षित हुआ। हिंदू जनता मुस्लिम आक्रमणों से भयभीत होने की अपेक्षा अधिक सजग और सचेत हो गयी। आपसी मददगार को कम करने के लिए सुगम मार्ग ढूँढे जाने लगे। वर्ण विषयों के लोकप्रिय होने के कारण उसकी भाषा और शैली की सादगी तथा अनगढ़पन से कोई बाधा नहीं पहुँची। फिर भी, शास्त्रीय परंपरा के समर्थकों द्वारा उनमें प्रमुख दोष ढूँढे जाने लगा।